Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क्र० ९२६

अस्पृश्यता : एक महापाप

—सं०, वियोगी हरि

हरिजन सेवक संघ

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

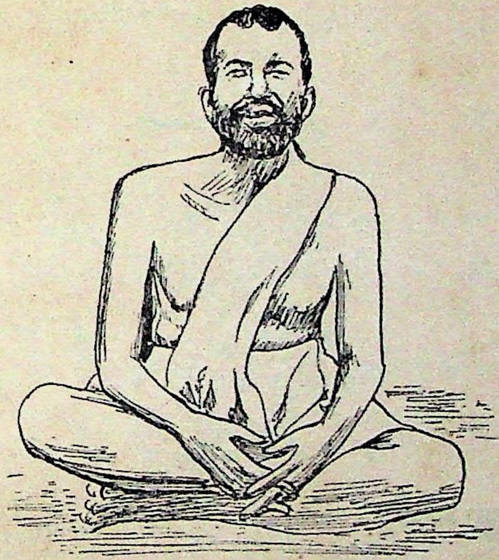

श्रीरामकृष्ण परमहंस

सचाई और ईमानदारी के साथ मैं यह चाहता हूँ कि ब्राह्मण कहे जानेवाले वर्ण का होनेपर भी मैं अपनेको उसी दर्जे का बनालूँ, जिस दर्जे का भंगी समझा जाता है। जन्म से न कोई ऊँच है, न कोई नीच।

[कहते हैं कि साधना के दिनों में एक दिन परमहंसदेव ने अपने वर्णाभिमान को नष्ट कर देने की दृष्टि से एक भंगी के घर के आँगन को अपने लम्बे-लम्बे केशों से झाड़ा-बुहारा था।]

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

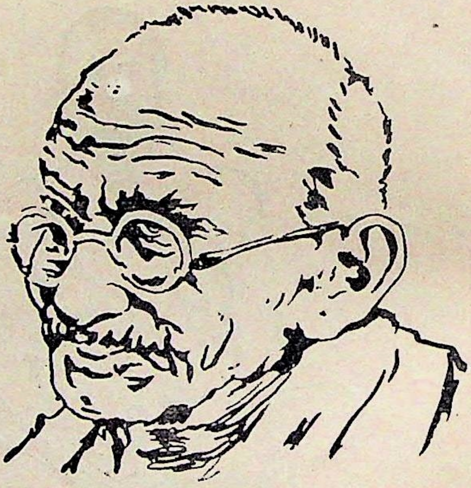

महात्मा गांधी

१. मैं फिर जन्म लेना नहीं चाहता। पर अगर मेरा पुनर्जन्म हो, तो मैं अछूत जातियों में पैदा होना चाहूँगा, ताकि मैं उनके दुःखों का साथी बन सकूँ, उनके कष्टों और अपमानों को भोगूँ और दुःखमय अवस्था से उनके उद्धार का यत्न करूँ। इसलिए मैं प्रार्थना करता हूँ कि यदि मेरा पुनर्जन्म हो, तो मैं न क्षत्रिय के घर में पैदा होऊँ, न ब्राह्मण के, न वैश्य के और न शूद्र के, बल्कि किसी भंगी के घर में पैदा होऊँ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

२. चाहे मैं टुकड़े-टुकड़े कर दिया जाऊँ, पर दलित जातियों से मैं अपनी आत्मीयता छोड़ने का नहीं।

जिस प्रथा की बदौलत हिन्दुओं का एक बड़ा भाग पशु से भी बदतर हालत को जा पहुँचा है, उसके लिए मेरे रोम-रोम में घृणा भर रही है। जिस धर्म के अनुयायियों के कारण अछूतों को पानी भी मिलना दुश्वार हो जाये, उसकी निर्दयता को क्या कहा जाये? पानी का त्रास तो एक दुश्मन को भी नहीं दिया जा सकता। और यह सब होता है धर्म के नाम पर!

३. मैं मानता हूँ कि जैसा हमने बोया है, वैसा ही हम फल पा रहे हैं। हरिजनों का अपमान करके हम सारे संसार में अपमानित हो रहे हैं।

४. कोई मनुष्य जन्म से ही अछूत है और उसे अछूत रहकर ही मरना पड़ेगा ऐसा कोई विधान हिन्दू धर्म में नहीं है, यह मेरा विश्वास है। ऐसे अधर्म को धर्म का नाम देना अधर्म करने के समान है।

५. अस्पृश्यता हिन्दुओं का पाप है। इसे धोने के लिए उन्हें तप करना होगा, अपने आपको शुद्ध करना होगा। हरिजन भाई-बहिनों का ऋण जो उनपर चढ़ा हुआ है, उसे चुकाना ही होगा।

६. सवर्ण हिन्दुओं का यह समझना गलत है कि वे हरिजनों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पर कोई एहसान कर रहे हैं। जो कुछ भी वे इस समय हरिजनों के लिए कर रहे हैं, वह तो उनके प्रति पीढ़ियों से किये गये पापों का बहुत देर से किया हुआ एक छोटा-सा प्रायश्चित्त है।

७. ऐसे समाज का सदस्य रहकर मैं जीना नहीं चाहता, जो अपने दलित भाइयों के साथ ज़रा-सा भी न्याय करना नहीं चाहता—खासकर उस समय जबकि वे किसी अपने अपराध से अछूत नहीं हैं।

८. हम लोगों की धार्मिक शिक्षा की शुरूआत तभी होगी, जबकि हम हिमालय की चोटियों से नीचे उतरकर इन अछूत कहे जानेवाले भाइयों के साथ अपनी एकरूपता साबित कर देंगे।

९. ऐसे हरएक वचन को, जिसके लिए धर्मशास्त्र का वचन होने का दावा किया गया हो, सत्य की निहाई पर दयारूपी हथौड़े से पीटकर देख लेना चाहिए। अगर वह पक्का मालूम दे और टूट न जाये, तो उसे ठीक समझना चाहिए; नहीं तो हजारों शास्त्रवादियों के रहते हुए भी 'नहीं ऐसा नहीं है' ही कहते रहना चाहिए।

१०. बहुत-से लोग मुझे कहेंगे कि तुम सनातनी कहाँ से हो गये? कभी तुमने काशी-विश्वनाथ का दर्शन नहीं किया;

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यही नहीं, उल्टे एक ढेढ़ की लड़की को गोद ले लिया ! मुझे इन सवाल पूछनेवालों पर दया आती है।

महात्मा ज्योतिराव फुले*

महार, मांग, ब्राह्मण, मराठे, माली आदि सब जातियों और सब धर्मों के लोग बराबर हैं। उनसे काम कराने में किसीको भी आपत्ति नहीं होनी चाहिए।

महार, मांग, मराठे, माली, ब्राह्मण आदि किसी भी जाति के जो व्यक्ति ईश्वर को मानकर नीति के अनुसार स्वच्छ उद्योग-धंधे करने का निश्चय करके उसीके अनुसार आचरण करते हैं, उनको मैं अपने कुटुम्बियों के समान समझकर उनके साथ रोटी-व्यवहार करूँगा। मनुष्य की श्रेष्ठता उसके जन्म से नहीं बल्कि उसके गुणों से है।

---

* महाराष्ट्र में सौ वर्ष पहले इन्होंने अस्पृश्यता-निवारण का कार्य शुरू किया था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लोकमान्य तिलक

अस्पृश्यता एक ऐसी रूढ़ि है, जिसका नाश होना ही चाहिए। जो अस्पृश्यता मरने पर नहीं रहती, जो अस्पृश्यता परमेश्वर के घर जाने में रुकावट नहीं डालती, उसे अपने समाज में चलने देना परमेश्वर के प्रति पाप करने के जैसा है।

अस्पृश्यता का कोई शास्त्रीय आधार नहीं। परमेश्वर के मन्दिर का दरवाजा किसीके लिए बन्द नहीं है, और वह बन्द हो जाये तो परमेश्वर परमेश्वर नहीं, ऐसा मैं मानता हूँ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स्वामी विवेकानन्द

हम हिन्दू हैं, पर हम 'छुओ मत' का मत माननेवाले नहीं हैं। यह मत हमारे हिन्दूधर्म का नहीं है। यह तो एक अजीब-सा पाखण्ड-मत है। जबतक यह पाखण्ड बाकी है

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तबतक हमारे राष्ट्र की उन्नति कैसे हो सकती है ? 'छुओ, मत' एक तरह का दलदल है, जिसमें फँसकर न जाने कितने प्राण गँवा चुके हैं। अतः इस 'छुओ मत' से सावधान !

यह 'छुओ मत' का धर्म न तो वेदों में है, न पुराणों में। न यह भक्ति में है, न मुक्ति में। 'हमें छुओ मत' 'हमें छुओ मत'—बस यहींतक हमारा धर्म आज रह गया है। कैसी भयंकर अधार्मिकता है यह ? इसे अपनाकर तुम क्यों अपने जीवन का सर्वनाश कर रहे हो ?

'आत्मवत् सर्वभूतेषु' का सिद्धान्त क्या अब सिर्फ़ पोथियों में ही लिखा रह जायेगा ? क्या वे लोग दूसरों को शुद्ध कर सकेंगे, जो अछूतों की हवा लगजाने से ही अशुद्ध हो जाते हैं ? अरे ! यह तो एक भयंकर मानसिक रोग है। सावधान ! सावधान !!

समता ही जीवन है, और विषमता ही मृत्यु।

आज हमारे धर्मप्रधान भारत में कहाँ है ज्ञान, कहाँ है भक्ति, और कहाँ है योग ? सभीके रास्ते आज बन्द हो गये हैं। बस 'छुओ मत' का यह धर्म ही बच रहा है ! कहते हैं—'मुझे मत छुओ' यह सारी दुनिया अपवित्र है—पवित्र हूँ तो एक मैं ही !' वाह ! क्या ही ब्रह्मज्ञान है ! तुम्हारा ईश्वर-परमेश्वर तुम्हीं तो हो ! आज का ब्रह्म सर्व-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

व्यापक कहाँ रहा ? है वह किसीकी अन्तरात्मा में ? अगर कहीं है, तो सिर्फ रसोई की बटलोई में ! बस, मैं ही परम-पवित्र हूँ-और यह सारी दुनिया अपवित्र है।

इस छुआछूत ने ही हमें इतना नीचा गिराया है। इस 'छुओ मत' ने हमारे सारे देश को कायर बना डाला है। देश इसीकी बदौलत आज अविद्या के अन्धकूप में पड़ा सड़ रहा है।

हम सदा अपने ही भाइयों से यही कहते रहते हैं--'हमें छुओ मत' 'हमें छुओ मत'। देश का हृदय क्या एक-दम पत्थर ही हो गया है ? नाश हो तुम्हारे इस 'छुओ मत' के धर्म का।

मैं सूर्य-प्रकाश की तरह स्पष्ट देख रहा हूँ, कि घट-घट में एक ही परमेश्वर रम रहा है। तो फिर क्यों नहीं इस अस्पृश्यता-राक्षसी को नष्ट कर देते हो ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

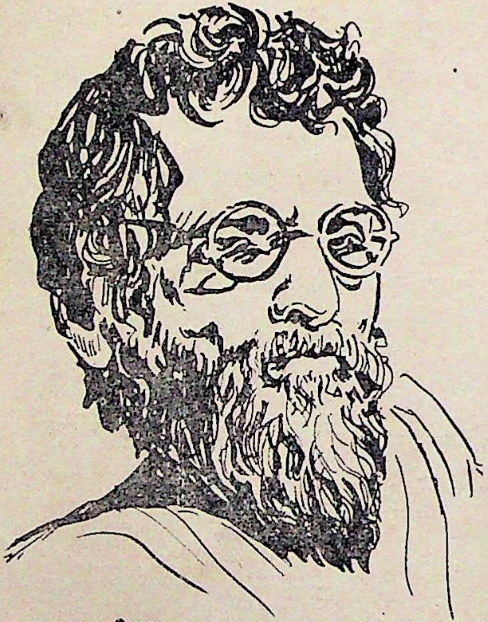

आचार्य विनोबा

अस्पृश्यता-निवारण की बात उठने पर कुछ लोग कहते हैं--"भाई, यह बात तो होने ही वाली है, समय का प्रवाह ही ऐसा है, इसके लिए इतना आग्रह रखने की क्या ज़रूरत ? समय का प्रवाह अनुकूल है, इसलिए कोशिश की ज़रूरत नहीं, और समय प्रतिकूल हो तो कोशिश से कुछ होने का नहीं । मतलब, दोनों तरह से कोशिश की ज़रूरत नहीं है । दुनयावी कामों में कोशिश, और धर्म को भाग्य-भरोसे, खूब ! यह धर्म को धोखा देना नहीं है, तो क्या

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है ? लेकिन धर्म कभी धोखा नहीं खा सकता। धर्म को धोखा देने के प्रयत्न में मनुष्य अपने-आपको ही धोखे में डालता है।

समय का प्रभाव अस्पृश्यता-निवारण के अनुकूल है। अगर इसका अर्थ यह किया जाये कि हरिजनों में जागृति आ गई है, वे हमसे अपने आप करा लेंगे, फिर हम क्यों करें, तब तो ठीक ही है। वह भी होगा। लेकिन हमें फिर आत्म-शुद्धि का पुण्य नसीब होने का नहीं। ज्ञानदेव ने कहा है कि दूध उफन जाने से 'होम हुआ' नहीं कहलाता। 'अग्नि का आहुति लेना' और 'अग्नि को आहुति देना' इसमें भेद है। पहली चीज़ को 'आग लगना' कहते हैं और दूसरी को 'यज्ञ करना' कहा जाता है। यदि हम आत्म-शुद्धि के यज्ञ-कुण्ड में अस्पृश्यता की आहुति न देंगे, तो सामाजिक बलवे की आग लगकर अस्पृश्यता जल जाने-वाली है, यह निश्चित बात है। परमेश्वर हमें समय रहते सद्बुद्धि दे।

मैं आजकल भूमिदान-यज्ञ में लगा हुआ हूँ, पर उसमें भी हरिजनों को नहीं भूला हूँ—भूल भी कैसे सकता हूँ, जब कि मैं खुद अपनी इच्छा से और कामों से भी हरिजन बन चुका हूँ ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

महर्षि विट्ठल राम शिन्दे†

अपनेको ब्राह्मण, क्षत्रिय माननेवाली जातियाँ शूद्र और अतिशूद्र बन गई हैं, और इससे उलटा भी समाज में होता रहा है--केवल देखने को आँखें और सुनने को कान चाहिए।

यदि एक महार अपनी जाति और धर्म को छोड़कर ईसाई बन जाता है तो वह उस धर्म में धर्मगुरुतक बन सकता है। परन्तु क्योंकि उन भाइयों ने केवल अपने धर्म की परम्परा की रक्षा की, इसलिए हम उन्हें बहिष्कृत मानने लगे ! यह बड़ी ही निराशा और अन्याय से भरी स्थिति है।

गोपाल ग० आगरकर*

मैंने अपने इस विचार को अपने देश-भाइयों से छिपाकर नहीं रखा कि अस्पृश्य माने जानेवाले महारों की स्थिति सुधारकर उनको और वेदसम्पन्न ब्राह्मणों को मैं एकही पंक्ति में देखूँ, तो मैं अपने आपको अत्यन्त कृतार्थ मानूँगा।

अनेक आपत्तियों को हम जाति-भेद के कारण ही भोग रहे हैं।

---

† महाराष्ट्र के महान् समाज-सुधारक, जिन्हें श्री ठक्करबापा गुरु के समान मानते थे।

* महाराष्ट्र के कट्टर समाज-सुधारक, जो पहले तिलक और गोखले के साथियों में थे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सरदार पटेल

जबतक हरएक हरिजन हिन्दुस्तान के ऊँचे-से-ऊँचे आदमियों के साथ पूरी बराबरी का दावा नहीं कर सकता या वह अधिकार नहीं पा लेता, तबतक हिन्दुस्तान की आज़ादी अधूरी ही रहेगी। हरिजनों का काम हर हिन्दुस्तानी के लिए एक पवित्र प्रतिज्ञा ही है। जबतक वे एक भी अधिकार से वञ्चित हैं, तबतक हम सबके लिए यह शर्म की बात है। हरिजनों की तरक्की का भार जितना उनके खुद के ऊपर है

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उससे दूसरों के ऊपर वह कहीं ज्यादा है, और उन्हें आगे बढ़ाने का कर्त्तव्य राज्य और नागरिकों दोनों का है। हरिजनों का राजनैतिक अधिकार या सामाजिक सुधार सिर्फ़ हक़ की ही बात नहीं, बल्कि राज्य का कारोबार चलानेवालों और विधान-सभाओं द्वारा किया हुआ एक वायदा है, जिसे पूरा किये बग़ैर वे छूट नहीं सकते।

डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

धर्म में अस्पृश्यता-जैसी दुष्ट कल्पना के लिए स्थान हो ही नहीं सकता। यह सवर्ण और अवर्ण का भेद किसी भी दर्शन-शास्त्र में नहीं पाया जाता। उपनिषदों में मनुष्य-मनुष्य के बीच में कोई भेद नहीं किया गया है; सभी मनुष्यों को "अमृतस्य पुत्राः" कहा गया है।

अतः अस्पृश्यता धर्म, नीति और सामूहिक आदर्शों तथा हमारे संविधान के विरुद्ध है। एक मनुष्य को दूसरे मनुष्य से अलग रखनेवाली यह बनावटी रुकावट जल्द-से-जल्द दूर हो जानी चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

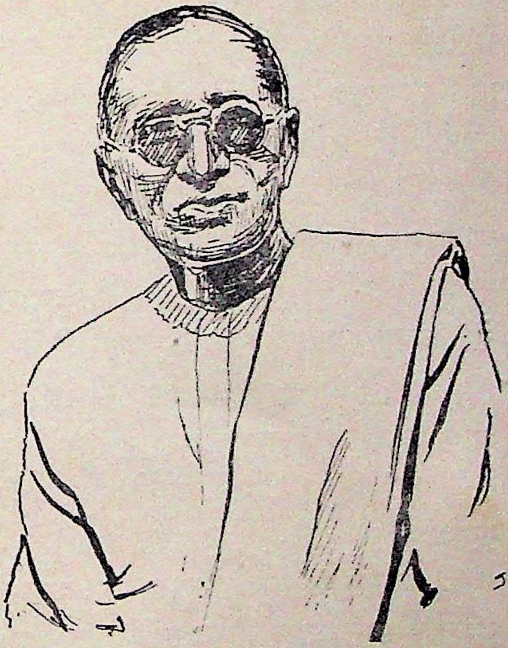

श्री च० राजगोपालाचार्य

१. जान पड़ता है, कि दुर्वासा-सरीखे किसी ऋषि ने हिन्दुओं को यह शाप देदिया है, कि वे अपने भाई-बहिनों-तक को भूल जायें।

हरिजनों के साथ बहुत-से सवर्ण हिन्दुओं ने जैसा व्यवहार किया है उसे शकुन्तला के प्रति किये गये दुष्यन्त

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

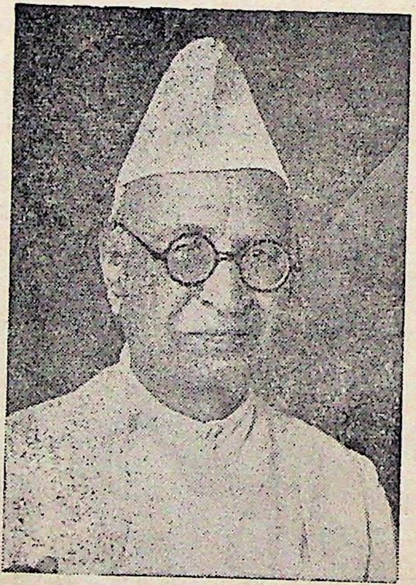

श्रीठक्कर बापा

हरिजन भाई-बहिनों को अभी हिन्दूसमाज में समरस करने में हमें पूरी सफलता नहीं मिली है। देहातों में अब-भी छुआछूत की भावना लगभग पहले की जैसी ही है। क़ानूनी रूप से तो हरिजनों को कुओं से पानी भरने आदि के नागरिक अधिकार मिल गये हैं, पर व्यवहारतः दैनिक जीवन में उनको अपने नागरिक अधिकारों का उपयोग व

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उपभोग करने में पग-पगपर बाधाएँ आती हैं। इसलिए सभी हिन्दुओं, खासकर हरिजन-सेवकों का यह धर्म हो जाता है कि हरिजनों को नागरिक सुविधाएँ दिलाने और प्राप्त करने में जो कठिनाइयाँ आयें उन्हें दूर करने में वे लग जायें। हमें अपना कार्य-क्षेत्र शहर छोड़कर देहातों की ओर ले जाना होगा, जहाँ हरिजनों को अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

श्रीरामानन्द चटर्जी*

काकिनाडा-कालेज के प्रिंसिपल ने मेरा एक छात्र से अपनी-प्रयोगशाला में परिचय कराया, जो 'अस्पृश्य' कही जानेवाली जाति का था। मैंने उसके शरीर का स्पर्श किया, और कहा कि "इस स्पर्श से हम दोनों में से किसी-के भी शरीर का 'तापमान' [टेम्परेचर] चढ़ा-उतरा नहीं।"

मतलब मेरा यह था कि अस्पृश्य का स्पर्श न तो ब्राह्मण के 'पवित्र' शरीर को घुला देता है, और न ब्राह्मण की 'ब्रह्माग्नि' से अस्पृश्य की देह ही भस्म हो जाती है।

---

* "मॉडर्न रिव्यू" तथा "प्रवासी" के यशस्वी संपादक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्रीकिशोरलाल घ० मशरूवाला

१. मन्दिर-प्रवेश का सवाल तो अभी सुलझाना बाकी ही है। यह सब बहुत ही दुःखदायी है। इसमें धर्म का तो लेश नहीं ; सिर्फ अपना-अपना स्वार्थ ही दिखाई देता है। जहाँ बन्धन तोड़ने में हमारा स्वार्थ होता है, वहाँ तो हमें ज़रा भी छूत नहीं लगती। लेकिन जहाँ हमें अपना कोई स्वार्थ सधता दिखाई नहीं देता, वहाँ हम बिल्कुल संकुचित वृत्ति के बन जाते हैं।

२. हरिजनों के साथ बरते जानेवाले अन्याय में इरादतन दुष्टता उतनी नहीं है, जितनी परम्पराओं से चली आती हुई रूढ़ियों का संस्कार काम करता है। जिस तरह हरिजनों की स्थिति ऐसी नहीं है कि वे क़ानून का सहारा ले सकें, उसी तरह सवर्णों में भी इतनी शक्ति नहीं कि वे रूढ़ियों की गुलामी से अपनेको मुक्त कर सकें। देश तो आज़ाद हुआ, लेकिन रूढ़ि की बेड़ी अभी भी कहाँ कटी है ?

इसलिए दोनों के छुटकारे का सवाल है। इसके लिए हरिजन और उनके सवर्ण मित्र दोनों को तप करने की ज़रूरत है, जिससे अपने आपको तकलीफों में होमकर वे दोनों अपने-आपको मुक्त करसकें।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मूल्य
एक आना

उद्योगशाला प्रेस, किंग्सवे, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE